संगम काल (100-300AD): राजनीति, प्रशासन, अर्थव्यवस्था, समाज एवं धर्म

भाग:-7

डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

SNSRKS, कॉलेज सहरसा

संगम कालीन अर्थव्यवस्था (Economy)

संगम कालीन अर्थव्यवस्था सुचलित तथा पूर्णतया आत्मनिर्भर थी| सामान्य लोग अधिकांशतया कृषक, पशुपालक, शिकारी व मछुआरे थे| कृषि के अतिरिक्त जहाजों का निर्माण तथा कताई बुनाई महत्वपूर्ण उद्योग था| अधिकांश व्यापार वस्तु विनिमय द्वारा होता था| अनाज का विनिमय सर्वाधिक स्वीकृत माध्यम था| धान, गन्ना, रागी तथा जौ इस काल की प्रमुख फसलें थी| ऐसा विदित होता है कि यहां की भूमि उपजाऊ थी तथा अच्छी पैदावार होती थी|

किसानों को 'वेलार' कहते थे| इनके 2 वर्ग थे| एक संपन्न किसान तथा दूसरा मजदूर| मजदूर वर्ग की स्थिति दयनीय थी| इस काल में महिलाएं भी कृषि कार्यों में पुरुषों का सहयोग देती थी| अनाज के साथ-साथ कुछ व्यापारिक फसलें भी उपजाए जाते थे| इसमें कटहल, केला, नारियल तथा मसाले में गोल मिर्च, हल्दी, जायफल और इलायची इत्यादि थे| दक्षिण भारत अपने मसालों के निर्यात के लिए प्रसिद्ध था|

संगम काल में कृषि को बढ़ावा देने के लिए नदियों को काटकर नहर बनाया जाता था| तालाब के माध्यम से भी सिंचाई का प्रबंध किया जाता था|

संगम काल में अनाजों को सुखाकर अनेक उत्पाद बनाया जाता था| उस समय शराब आदि का उत्पादन गन्ना से किया जाता था| इस समय आंतरिक एवं बाह्य व्यापार होता था| बाह्य व्यापार ही इस काल में समृद्धि का कारण था| आंतरिक बाजार को अवनम कहा जाता था| यह स्थानीय लेन-देन का एक महत्वपूर्ण केंद्र था| आंतरिक व्यापार विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न वस्तुओं के उत्पादन के कारण होता था| उत्तर व दक्षिण के मध्य आवागमन के साक्ष्य मिलते हैं| शिल्पादीकारम से ज्ञात होता है कि बाजार में जौहरी का विशेष महत्व था| आंतरिक व्यापार में जड़ी-बूटियों, तेल मांस इत्यादि का व्यापार होता था|

संगम काल का सबसे महत्वपूर्ण व्यापार विदेशी व्यापार था| रोम सम्राट आगस्टस, तिबेरियस एवं नीरो के काल तक यह व्यापार बहुत फला फूला| पेरिप्लेस ऑफ दि एरिथ्रियन सी से अरब, मिस्र के साथ भी व्यापार की जानकारी मिलती है| पुरातात्विक स्रोतों में मुजिरिश तथा करुयुर में अनेक रोम के सामग्री प्राप्त हुए हैं| मुजिरिश में आगस्टस का मंदिर रोमनों द्वारा बनवाया गया था|

बाहृय व्यापार के लिए संगम काल में पत्तनो का उपयोग किया जाता था| पांड्य राज्य में शालियूर तथा चेर राज्य में बंदर नामक बंदरगाह की गणना महत्वपूर्ण बंदरगाह के रूप में की जाती थी| पुहार का उल्लेख टॉलमी तथा खबेरिस दोनों ने की है यह कावेरीपत्तनम का महत्वपूर्ण व्यापारीक केंद्र था| तोंडी, मुशिरी तथा पुहार में यवनों की उपस्थिति सालों भर रहती थी| यवन लोग मुसीरी में सोने भरकर लाते थे तथा यहां से काली मिर्च तथा समुद्री उत्पाद ले जाते थे| नीरपेयारू एक अन्य समुद्री बंदरगाह था, जहां पर पश्चिम से घोड़े और उत्तर से अन्य उत्पादित वस्तु लाए जाते थे|

आयात की जाने वाली वस्तुएं तांबा, रागा, शीशा, गदला कांच, शराब, दोहत्थे कलश, मुद्राए पुखराज इत्यादि थी| निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में जटामांसी, तेजपात, गोल मिर्च, वस्त्र, मलमल, विलासिता के समान, कछुए की खोपड़ी, रस, मोती इत्यादि थी|

व्यापार का संतुलन भारतीय पक्ष में था| इसी कारण प्लिनी निराश होकर लिखता है कि रोम भारत से व्यापार करके अपने सोने के खजाने को लूटा रहा है| संगम साहित्य में मुद्रा के साक्ष्य मिलते हैं एवं खुदाई में अनेक स्थानों पर विदेशी सिक्के प्राप्त हुए हैं| साहित्य में काशु, कनम, पोन तथा वेनपेन नामक सिक्के का उल्लेख मिलता है| माप-तोल के लिए अंबानम का प्रयोग किया जाता था| छोटे तौल के रूप में नालि, उलाक और अलाक प्रचलित था|